जनता की पहलकदमी की एक शानदार मिसाल

जनता के न्याय का एक अद्भुत दृश्य

राकेश कुमार

मेक्सिको शहर से 50 कि.मी. उत्तर एक ग्रामीण बस्ती टेप्टीपेक में एक अभूतपूर्व दृश्य था। कमर के ऊपर बिना वस्त्रों के, एक दूसरे से बंधे हुए पुलिस दस्ते के करीब 70 सदस्य, अपमानित और पराजित, सिर के पीछे दोनों हाथ रखे हुए घुटने के बल एक लाइन से बैठे थे। उस इलाके के जुझारू और बगावती तेवर के छात्रों और किसानों द्वारा पुलिस को उनकी बर्बरता की यह सजा दी जा रही थी। राज्य सत्ता के दमनतंत्र की यह मशीनरी इस दिन छात्र-किसान एकता के सामने अवश और निरुपाय थी। सचमुच, दिन न्याय का एक अद्भुत दिन था वह।

टेप्टीपेक के पास एल मेक्से में लुइस विल्लारियल शिक्षक कालेज की जिस घटना ने छात्रों और किसानों में पुलिस के खिलाफ गुस्से को इतना भड़का दिया था और जिसकी परिणति उपरोक्त वर्णित दृश्य में हुई उसकी शुरुआत इस प्रकार हुई थी :

इसी वर्ष जनवरी में प्रधानाचार्य और उपप्रधानाचार्य द्वारा विद्यालय फण्ड का अपने निजी स्वार्थों के लिए दुरुपयोग करने के मामले ने वहां के छात्रों को आन्दोलित कर दिया और उन्होंने उन दोनों को विद्यालय से निष्कासित करने का निर्णय लिया। प्रतिक्रिया में हिडालगो प्रदेश की बुर्जुआ पार्टी पी.आर.आई. की सरकार तुरन्त बदले की कार्रवाई में उतर पड़ी। राज्य शिक्षा अधिकारियों ने विद्यालय के छात्रावासों की खाद्य आपूर्ति पर रोक लगा दी। साथ ही बीस प्रोफेसरों को भी विद्यालय से हटा दिया। छात्रों ने इसका जबर्दस्त विरोध किया और हटाये गये प्रोफेसरों को वापस लौटाने की मांग को लेकर उन्होंने बसों तथा दूसरे वाहनों को अपने कब्जे में ले लिया।

21 जनवरी को पुलिस ने सौ छात्रों को उस समय गिरफ्तार कर लिया जब शाम के समय वे एक सांस्कृतिक कार्यक्रम से एल मेक्से की ओर लौट रहे थे। उसके कुछ दिनों के बाद सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था के राज्य अधिकारी ने विद्यालय को फौरी तौर पर बन्द कर देने की घोषणा कर दी और छात्र समिति के 36 सदस्यों को निष्कासित कर दिया। उसने यह निर्णय भी सुना दिया कि जिन छात्रों की पढ़ाई जारी रखने में रुचि हो वे प्रदेश (हिडालगो) की राजधानी पाचुका के राष्ट्रीय प्रशिक्षण विश्वविद्यालय में नामांकन करा लें।

लेकिन, फरवरी तक आते-आते छात्र खुले संघर्ष में कूद पड़े। पुलिस ने करीब 260 छात्रों को गिरफ्तार कर लिया। इनमें से अधिकांश दूसरे प्रशिक्षण केन्द्रों के छात्र थे जो अलग-अलग इलाकों से लुइस विल्लारियल के अपने छात्र साथियों के समर्थन में आ खड़े हुए थे। कुछ को जेल भेज दिया गया और कुछ छात्रों को वापस उनके इलाकों में जबर्दस्ती पहुंचा दिया गया। फरवरी के पहले पखवारे में एल मेक्से के सौ से ऊपर की संख्या में छात्रों ने मेक्सिको शहर में सेक्रेटरी कार्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन किया।

17 फरवरी को एल मेक्से से छात्र और शिक्षक विरोध प्रदर्शन के लिए पाचुका पहुंचे। दूसरे इलाकों से भी छात्रों की भारी आबादी उनके समर्थन में आ जुटी। शहर के मुख्य चौक पर उन्होंने अपना डेरा जमाया। 19 फरवरी को रात के 3 बजे राज्य के 400 ग्रेण्डेरास (दंगारोधी पुलिस के जवान) मुख्य चौक पर आ पहुंचे। उन्होंने नगर हाल के दरवाजों के शीशों को तोड़ दिया और इसका आरोप छात्रों के मत्थे मढ़ कर भयंकर दमनात्मक कार्रवाई शुरू कर दी। उन निहत्थे छात्रों पर वे अपनी पूरी ताकत के साथ टूट पड़े। कइयों को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया और आन्दोलन के नेताओं के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए गिरफ्तार छात्रों पर डंडे तोड़े गये और उन्हें अमानुषिक यातनाएं दी गईं। कुछ ही घण्टों बाद, 6 बजे के करीब, ''ग्रेण्डेरास'' ने एल मेक्से के परिसर में बलपूर्वक प्रवेश किया और 400 छात्रों के साथ ही साथ उनके अभिभावकों और समर्थकों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उन्हें बर्बरतापूर्वक पीटा। बच्चों और बुर्जुगों तक को नहीं बख्शा। छात्राओं के साथ बदसलूकी की और कइयों के साथ बलात्कार तक किया।

सुबह के आठ बजते-बजते टेप्टीपेक में इस बर्बर हमले की जानकारी चप्पे-चप्पे में आग की तरह फैल गयी। स्त्रियों ने पहलकदमी ली और नेतृत्व की कमान को अपने हाथों में सम्भाल लिया। धीरे-धीरे लोगों की भीड़ संगठित

चित्र : 'टाइम्स आफ इण्डिया' 21.2.2000 से साभार

भगतसिंह के जन्मदिवस (27 सितम्बर) के अवसर पर

भारतीय रिपब्लिक के नौजवानो, नहीं सिपाहियो, कतारबद्ध हो जाओ। आराम के साथ न खड़े रहो और न ही निरर्थक कदमताल किये जाओ। लम्बी दरिद्रता को, जो तुम्हें नाकारा कर रही है, सदा के लिए उतार फेंको। तुम्हारा बहुत ही नेक मिशन है। देश के हर कोने और हर दिशा में बिखर जाओ और भावी क्रान्ति के लिए, जिसका आना निश्चित है, लोगों को तैयार करो। फर्ज के बिगुल की आवाज सुनो। वैसे ही खाली जिन्दगी न गंवाओ। बढ़ो, तुम्हारी जिन्दगी का हर पल इस तरह के तरीके और तरतीब ढूंढ़ने में लगना चाहिए, कि कैसे अपनी पुरातन धरती की आंखों में ज्वाला जागे और एक लम्बी अंगड़ाई लेकर जागे। अंग्रेज साम्राज्य के खिलाफ नवयुवकों के उर्वर हृदयों में एक उकसाहट और नफरत भर दो, ऐसे बीज डालो जो कि उगें और बड़े वृक्ष बन जायें क्योंकि इन बीजों को तुम अपने गर्म खून के जल से सींचोगे। तब एक भयानक भूचाल आयेगा, जो बड़े धमाके से गलत चीजों को नष्ट कर देगा और साम्राज्यवाद के महल को कुचलकर धूल में मिला देगा और यह तबाही महान होगी।

तब, और सिर्फ तभी, एक भारतीय कौम जागेगी, जो अपने गुणों और शान से इन्सानियत को हैरान कर देगी। तब चालाक और बलवान सदा से कमजोर लोगों से हैरान रह जायेंगे। तभी व्यक्तिगत मुक्ति भी सुरक्षित होगी और मेहनतकश की सरदारी और प्रभुसत्ता को सत्कारा जायेगा। हम ऐसी ही क्रान्ति के आने का संदेश दे रहे हैं। क्रान्ति अमर रहे!

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के घोषणापत्र से

दायित्वबोध

उन बुद्धिजीवियों की पत्रिका जिन्होंने जनता का पक्ष चुना है

जुलाई-सितम्बर 2000 अंक की महत्वपूर्ण सामग्री

- एक नई संगीत संस्कृति के निर्माता
- स्त्री मुक्ति का राजनीतिक अर्थशास्त्र

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का दस्तावेज

- समाजवाद की अवधि में वर्ग संघर्ष के नियम
- महत्वपूर्ण होती है आम जनता : एक गणितज्ञ की आस्था
- राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त
- आर्थिक-राजनीतिक टिप्पणियां

सम्पादकीय कार्यालय :
3/274, विश्वास खण्ड, गोमतीनगर
लखनऊ-226010
फोन : (0522)-308896

एक प्रति : 15 रुपए
वार्षिक : 60 रुपए

कार्रवाई के लिए इकट्ठा होने लगी। लोगों ने पुलिस के बर्बर हमले को छात्रों के खिलाफ ही नहीं वरन् इसे गरीबों के खिलाफ भी माना।

और फिर उन अति साधारण लोगों ने वह किया जो हर क्रान्तिकारी युवा और इंसाफ पसन्द व्यक्ति की स्मृतियों में हमेशा लौ बनकर जलती रहेगी। वे गरीब और साधनहीन लोग राज्य दमन तंत्र की शक्तिशाली पुलिस मशीनरी से टकरा गये और अपनी संगठित एकता के बल पर उन्हें घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। एक कुशल रणनीतिज्ञ की तरह पुलिस दस्ते को कैम्पस के भीतर ही घेर लेने के लिए लोगों ने विद्यालय के प्रवेश द्वारों और निकट के मार्गों को पत्थरों से बंद कर दिया और जगह-जगह बड़े-बड़े अलाव जला कर उनके भागने के रास्तों को जाम कर दिया। उनके वाहनों को चकनाचूर कर दिया। पुलिस दस्ते के कुछ सदस्य अपने को बचाने के लिए गन्दगी से बजबजाते पास के नाले में कूद पड़े। लेकिन 70 पुलिस वाले जनता के हाथों पकड़े गये।

जनता ने उनके कपड़े उतरवा लिये। अधोवस्त्रों को छोड़कर किसी-किसी के पैण्ट तक उतरवा लिये। उन्हें लम्बी रस्सी से एक साथ बांध दिया गया और टेप्टीपेक की सड़कों पर घुमाया गया। एक पुलिस के गले में लटकी तख्ती पर यह लिखा हुआ था—"मैं राज्य सरकार का कूड़ा हूं।" नगर के मुख्य चौक पर पुलिस वालों को घुटनों के बल बलपूर्वक बिठाया गया। लोग उन्हें घेर कर खड़े हो गये और उनकी वर्दियों, जूतों, जाकेटों को इकट्ठा कर उनमें आग लगा दी गई। पास में ही उनसे जब्त किये गये हथियारों—राइफलों तथा हथगोलों का जखीरा जनता के कब्जे में पड़ा हुआ था। पहले अधिकारियों ने लीपापोती करने की कोशिश की कि पुलिस दस्ता हथियारबन्द नहीं था। परन्तु सामने प्रत्यक्ष प्रमाण था, इसलिए अधिकारियों को पुलिस के हथियारबन्द होने की बात स्वीकार करनी पड़ी।

आम जनता की इस आक्रामक और साहसिक कार्रवाई के आगे प्रशासन को झुकना पड़ा और हिरासत में लिये गये छात्रों और शिक्षकों को उन्हें रिहा करना पड़ा। छात्रों-शिक्षकों की रिहाई के बाद ही जनता ने पुलिस दस्ते के लोगों को छोड़ा। और वह भी जब बहुत अनुनय-विनय करके विरोधी राजनीतिक दल के नेताओं ने जनता को इसके लिए मनाया। केवल तभी उन्हें इस जिल्लत से छुटकारा मिल सका।

टेप्टीपेक के और दुनिया के सभी आमजनों के लिए यह एक न्याय का दिन था, एक आनन्द का दिन था जब आतंक और दमनकारी सत्ता की प्रतीक बनी पुलिस उन साधारण लोगों के सामने शक्तिहीन, पराजित और निरुपाय थी जिन्होंने हमेशा ही इतिहास रचा है।

('रिवोल्यूशनरी वर्कर' में छपी रिपोर्ट पर आधारित)